ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

ब्रुसेलोसिस: जानकारी एवं बचाव

डॉ॰ सोनम भट्ट, डा॰ भूमिका[1] एवं डा॰अनिल कुमार[2]*
बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय, पटना

***सहायक प्राध्यापक, औषधि विज्ञान विभाग,**
1. सहायक प्राध्यापक, पशु लोक स्वास्थ्य एवं महामारी विज्ञान विभाग
2. सहायक प्राध्यापक, पशु नैदानिक परिसर विभाग

पशुपालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कृषि उत्पादन के साथ-साथ पशुपालन किसानों की आजीविका का स्रोत है । इसके लिए पशुओं का रोगमुक्त होना अतिआवश्यक है । मवेशियों में विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ पाई जाती है । उनमें से एक बीमारी का व्याख्यान इस लेख में किया है और उस बीमारी का नाम है ब्रुसेलोसिस । भारत में यह बीमारी बहुत प्रचलित है। इस बीमारी के बारे में बहुत से किसान भाई-बहन नहीं जानते हैं ।

ब्रुसेलोसिस को संक्रामक गर्भपात की बीमारी के नाम से जाना जाता है । यह एक पशुधन रोग है जो गर्भपात के कारण भ्रूण के नुकसान के लिए जिम्मेदार है। ब्रुसेलोसिस ब्रुसेला के जीवाणु के कारण होता है और यह जीवाणु मुख्य रूप से गर्भपात, जरी का न गिरना तथा बांझपन का कारण बनता है। यह बीमारी दुनिया के ज्यादातर देशों में प्रचलित है। यह मुख्य रूप से मवेशी , भैंस, बाइसन, सुअर, भेंड़, बकरी और कभी-कभी घोड़ों में पाई जाती है। यह रोग पशुधन उत्पादकों की क्षमता को कम करके आर्थिक रूप से किसानों को कमजोर कर देता है।

ब्रुसेलोसिस कितना गंभीर है ?

ब्रुसेलोसिस मवेशियों का एक गंभीर रोग है। बीमार पशुओं में दुध उत्पादन क्षमता कम हो जाती है बछड़े का नुकसान, कमजारे या रोग ग्रस्त बछड़े का जन्म, बांझपन तथा गर्भपात जैसे लक्षण मिलते है जिससे किसानों को आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ता है तथा अंतराष्ट्रीय व्यापार में भी कमी आती है। जिससे देश की अर्थव्यवस्था पर भी प्रभाव पड़ता है।

यह बीमारी पशुओं के लिए एक भयानक खतरा है तथ्य यह है कि यह बीमारी तेजी से पुरे पशुशाला में फैल जाती है तथा इसमें पशुओं की मृत्यु भी हो सकती है। यह बीमारी पशुओं से मनुष्यों में भी फैल सकती है जो इसको और अधिक गंभीर बनाता है । इसे अन्डुलेंटबुखार, मालटा बुखार तथा मेडीटेरेनियन बुखार के नाम से जाना जाता है। मनुष्यों को यह बीमारी मुख्यतः दुध और बीमार पशुओं के स्राव के साथ निकट सम्पर्क के कारण होता है। नए खरीदे गए पशु को पशु बाड़े में शामिल करने से पहले लगभग 15 दिनों तक निगरानी में रखना चाहिए । आवास की साफ-सफाई अच्छी तरह से होनी चाहिए ।

कारणः

1. मवेशी में यह रोग विशेष रूप से ब्रुसेला अबोरटस के कारण होता है।
2. संक्रमण तेजी से फैलता है और जिन मवेशियों में टीकाकरण नहीं हुआ होता है उनमें यह गर्भपात का कारण बनता है ।
3. प्राकृतिक संचरण जीवों के अंतर्ग्रहण द्वारा होता है, जो बड़ी संख्या में गर्भस्थ, भ्रूर्ण, भ्रूर्ण झिल्ली और गर्भाशय के बहाव में मौजूद होते हैं।
4. दूषित चारा और पानी के पीने से भी यह बीमारी होती है । यह अन्य जानवरों की दूषित जननांगो के चाटने से भी होता है ।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

5. कृत्रिम गर्भाधान द्वारा यह बीमारी हो सकती है । जब ब्रुसेला दूषित वीर्य गर्भाशय में जमा हो जाता है ।

लक्षणः

1. यह मुख्य रूप से परिपक्व जानवरों में होता है ।
2. यौन परिपक्व और गर्भवती मवेशी संक्रमण के लिए अधिक संवेदनशील होते है।
3. गर्भपात सबसे महत्वपूर्ण लक्षण है। गर्भपात मुख्य रूप से गर्भावस्था के अंतिम तीन महीनें में होता है।
4. संक्रमण कमजोर बछड़ों, जरी का न निकलना तथा दूध के उत्पादन को भी कम करता है।
5. बैल में वाहय जननांग जैसे-अंडकोष मुख्य रुप से संक्रमित हो सकते है ।
6. लम्बे समय तक संक्रमण के कारण मवेशियों में गठिया भी एक लक्षण देखनें को मिलता है ।

निदानः

1. निदान जीवाणु विज्ञान या सीरोलॉजी पर आधारित है ।
2. बैक्टीरिया को जरी से बरामद कर सकते है। लेकिन गर्भस्थ भ्रूण के पेट और फेफड़ों से शुद्ध रूप से जीवाणु मिलते हैं ।

उपचारः

ब्रुसेलोसिस का कोई इलाज नहीं है।संदेह के मामले में पशुचिकित्सक से परामर्श करें।

रोकथामः

1. टीकाकरण ही रोगनियंत्रण का एकमात्र साधन है।
2. 4-8 महीने की उम्र में मादा बछड़ों के लिए टीकाकरण किया जाता है ।
3. ब्रुसेलोसिस से बचाने के लिए जीवनकाल में केवल एक टीकाकरण की आवश्यकता होती है ।
4. ब्रूसेलोसिस के लिए 5 वें महीने से किसी भी गर्भपात का संदेह होना चाहिए।
5. गर्भपात के बाद कम से कम 20 दिनों के लिए पशुको तुरंत अलग कर दें।
6. गर्भस्थ भूर्ण, जरी, दूषित बिस्तर, चारा आदि, चूने के छिड़काव के बाद (कम से कम 4 फीट गहरे) दफन किया जाना चाहिए । इन सामग्रियों में बहुत अधिक जीवाणुभार होता है और अनुचित तरीके से निपटाने से खाद्य स्रोतों (चरागाह, चारा, पानी) को दूषित करके बीमारी फैलती है।
7. बीमार पशुओं को अलग करने के बाद पशुशाला को कीटाणु रहित करें।
8. बीमार पशु के योनि स्राव को 1-2% या 5% सोडियम हाइपो क्लोराइट (ब्लीच) घोल के साथ कीटाणु रहित करें।
9. पशुपालक को संक्रमित पदार्थ को नंगे हाथों से नहीं छूना चाहिए क्योंकि यह बीमारी बीमार पशु से आपको भी हो सकती है ।